Date: 26.7.2021	**Publication:** Dainik Bhaskar
Page no.: 9	**Edition:** Bhopal | Chandigarh | New Delhi
Headline: Guide to Health Insurance Portability	

बीमा की बात टेलीकॉम ऑपरेटर बदलना जितना आसान

महामारी में हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी ने निराश किया तो पोर्ट करें पॉलिसी

टीए रामलिंगम,
सीटीओ, बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस

हेल्थ इंश्योरेंस पोर्टेबिलिटी पॉलिसी की कंपनी बदलने की सुविधा देती है। इसमें पहले से मौजूद बीमारियों और टाइम एक्सक्लूजन के क्रेडिट का भी समावेश होता है। कुल मिलाकर इंश्योरेंस पोर्टेबिलिटी बीमा कंपनी से संतुष्ट नहीं होने पर ग्राहकों को क्यूमुलेटिव बोनस और समयबद्ध लाभ खोए बगैर बीमा कंपनी बदलने की आजादी देती है।

हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी पोर्ट करने के लिए इन दस्तावेज की जरूरत

▪ प्रपोजल फॉर्म	▪ पोर्टेबिलिटी फॉर्म	▪ पहचान प्रमाण
▪ पते का प्रूफ	▪ क्लेम हिस्ट्री	▪ मेडिकल हिस्ट्री

इंश्योरेंस पोर्टेबिलिटी की प्रक्रिया: हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी के नवीनीकरण की आखिरी तारीख से 45 दिन पहले पोर्ट प्रोसेस शुरू की जानी चाहिए। इसके लिए आपको पोर्टेबिलिटी फॉर्म के अलावा नया प्रपोजल फॉर्म भी जमा कराना होगा। नई बीमा कंपनी आपकी चिकित्सा, क्लेम्स की हिस्ट्री जानने के लिए मौजूदा कंपनी से संपर्क करेगी। नई कंपनी अपने मानदंडों के हिसाब से प्रतिबंधित कवर स्वीकार या अस्वीकार कर सकती है।

हेल्थ कवर पोर्ट कराते समय इन दो चीजों का रखें ध्यान

1. बीमित राशि यदि आप बीमा राशि बढ़ाने का विकल्प चुनते हैं तो ध्यान रखें कि प्रतीक्षा अवधि का लाभ केवल पुरानी बीमा राशि पर लागू होगा। अतिरिक्त बीमा राशि के लिए आपको नई बीमा कंपनी के साथ प्रतीक्षा अवधि पूरी करनी होगी।

2. बीमा कवर पर प्रतिबंध कई लोग इंश्योरेंस पॉलिसी इसलिए पोर्ट कराते हैं कि दूसरी कंपनी कम प्रीमियम ऑफर कर रही है। नई कंपनी का विस्तारित कवरेज, उसकी सीमाओं और उप-सीमाओं को समझें। यह क्लेम करते समय गफलत से बचाएगा।

नई कंपनी से कुछ न छुपाएं

हर पॉलिसी की अपनी खूबी होती हैं। आप क्या छोड़ रहे हैं और क्या अतिरिक्त पा रहे हैं, यह जानने के लिए दोनों पॉलिसियों की खासियत ठीक से देख लें। नॉन-डिस्क्लोजर की परेशानी से बचने के लिए क्लेम और मेडिकल हिस्ट्री का विवरण नई कंपनी को देना चाहिए।

ऑफर्स का तुलनात्मक अध्ययन

हेल्थ इंश्योरेंस पोर्टेबिलिटी बाजार में उपलब्ध ऑफर्स पता लगाने की आजादी देती है। लेकिन पोर्टेबिलिटी का विकल्प चुनने से पहले इसका नफा-नुकसान सही तरीके से आंक लेना जरूरी है। बेहतर होगा कि ऑफर्स का तुलनात्मक अध्ययन कर लें। इसके बाद ही फैसला करें, ताकि बाद में निराशा हाथ न लगे।